-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व–1

कक्षा 9 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

© NCERT not to be republished

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

2022-23

ISBN 81-7450-571-7

प्रथम संस्करण

मई 2006 ज्येष्ठ 1927

पुनर्मुद्रण

फरवरी 2007 माघ 1928
फरवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
नवंबर 2010 कार्तिक 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
अक्तूबर 2012 आश्विन 1934
फरवरी 2014 माघ 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फरवरी 2016 माघ 1937
दिसंबर 2017 पौष 1939
जनवरी 2019 माघ 1940
अगस्त 2019 भाद्रपद 1941

PD 80T RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, 2006

₹ 115.00

एन.सी.ई.आर.टी. वॉटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित तथा सरस्वती ऑफ़सेट प्रिंटर्स (प्रा.) लि., ए-5, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फ़ेज़-II, नारायणा, नयी दिल्ली- 110 028 द्वारा मुद्रित।

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलेक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाएगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III इस्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : *एम. सिराज अनवर*
मुख्य संपादक : *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी : *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक : *बिबाष कुमार दास*
सहायक संपादक : *शशि चड्डा*
उत्पादन अधिकारी : *अब्दुल नईम*

आवरण एवं सज्जा

पार्थिव शाह तथा उनकी सहायक श्राबोनी राय एवं शशि प्रभा झा

चित्रांकन

के. वर्गीज़

© NCERT not to be republished

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नये ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितनी वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत व बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन और इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया।

© NCERT not to be republished

-------- Click on the --------
Download Link
To view the complete book

हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों व सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
20 दिसंबर 2005

© NCERT not to be republished

इतिहास और बदलती दुनिया

रोज़मर्रा की ज़िंदगी जीते हुए जब हम अखबारों में दुनिया भर की घटनाओं के बारे में पढ़ते हैं तो आमतौर पर हम ठहर कर उन घटनाओं के लंबे इतिहास के बारे में नहीं सोचते। चीज़ें हमारी आँखों के सामने बदलती रहती हैं लेकिन हम कभी ये नहीं सोचते कि वह बदल क्यों रही हैं? बल्कि अकसर हम इस बात पर भी ध्यान नहीं देते कि पहले चीज़ें ऐसी नहीं थीं। इन बदलावों पर लगातार नज़र रखना, ये समझना कि बदलाव क्यों और कैसे आ रहे हैं, और यह भी कि हम आज जिस दुनिया में जी रहे हैं वह कैसे बनी है – यही इतिहास है।

कक्षा IX और X की इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का मुख्य ज़ोर यही समझने पर है कि समकालीन विश्व कैसे बना है। पिछली कक्षाओं (VI-VIII) में आपने भारत के इतिहास के बारे में पढ़ा है। अगले दो सालों (कक्षा IX और X) की इतिहास की पुस्तकों में आप यह जानेंगे कि किस तरह भारत के अतीत की कहानी दुनिया के लंबे इतिहास से जुड़ी हुई है। जब तक हम इस संबंध पर विचार नहीं करेंगे तब तक इस बात को अच्छी तरह नहीं समझ पाएँगे कि भारत में क्या और कैसे हो रहा था। यह बात इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है कि आज तमाम अर्थव्यवस्थाएँ और समाज दिनोंदिन गहरे तौर पर एक-दूसरे से जुड़ते जा रहे हैं। इतिहास को हमेशा भौगोलिक सीमाओं में बंद करके नहीं देखा जा सकता।

वैसे भी राष्ट्रीय भौगोलिक सीमाओं को ही अपने अध्ययन का एकमात्र केंद्रबिंदु मान लेना ठीक नहीं होगा। कई बार ऐसे मौके आते हैं जब एक छोटे से क्षेत्र – एक इलाके, एक गाँव, किसी रेगिस्तानी पट्टी, किसी जंगल, या किसी पहाड़ – पर ध्यान केंद्रित करने से हमें लोगों के जीवन में मौजूद भारी विविधता और उन इतिहासों को समझने में मदद मिलती है जिनसे किसी राष्ट्र का इतिहास बनता है। न तो हम लोगों के बिना राष्ट्र की बात कर सकते हैं और न ही राष्ट्र के बिना किसी इलाके की बात कर सकते हैं। फ़्रांसीसी इतिहासकार फ़र्नांड ब्रॉदेल के शब्दों में हम यह भी कह सकते हैं कि 'विश्व के बिना राष्ट्र की बात नहीं की जा सकती'।

अगले दो साल आप जो पाठ्यपुस्तकें पढ़ेंगे उनमें इसी लक्ष्य को अलग-अलग स्तरों पर साधने की कोशिश की गई है। इस दौरान हम कुछ खास समुदायों और इलाकों का अध्ययन करते हुए राष्ट्र के इतिहास तक और भारत व यूरोप के इतिहास से होते हुए अफ़्रीका और इंडोनेशिया के घटनाक्रमों तक जाएंगे। हमारे अध्ययन का केंद्र विषय के हिसाब से बदलता जाएगा।

ये विषय क्या हैं और उन्हें कैसे व्यवस्थित किया गया है? विषयवस्तु का चुनाव किस आधार पर किया गया है?

अब तक आधुनिक विश्व का इतिहास अकसर पश्चिमी दुनिया के इतिहास पर आश्रित रहा है। मानो सारे परिवर्तन और सारी तरक्की सिर्फ़ पश्चिम में ही होती रही हो। मानो बाकी देशों के इतिहास एक समय के बाद ठहर कर रह गए हों, गतिहीन और जड़ हो गए हों। इस इतिहास में पश्चिम के लोग उद्यमशील, रचनात्मक, वैज्ञानिक मेधायुक्त, मेहनती, कुशल और बदलाव के लिए तत्पर दिखाई पड़ते हैं। दूसरी तरफ़ पूर्वी

© NCERT not to be republished